घरों में रहें और अपनी जान बचाएं : ट्रंप

वाशिंगटन, एजेंसियां : अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने देशवासियों से घर पर रहने और अपनी जान बचाने की अपील की है। इसके साथ ही उन्होंने लोगों को आश्वासन दिया है कि देश में खाद्य सामग्री और आवश्यक वस्तुओं की कोई कमी नहीं है। बता दें कि अकेले शुक्रवार को अमेरिका में संक्रमण के सात हजार मामले सामने आए थे, जबकि 80 लोगों की मौत हुई थी। यहां पर मरने वालों की संख्या 340 हो गई। संक्रमित व्यक्तियों का आंकड़ा 6,574 पर पहुंच गया है।

शनिवार को व्हाइट हाउस में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में ट्रंप ने कहा, 'हमारी अपील है कि देशवासी अपने घरों में रहें। इससे उनका जीवन सुरक्षित रहेगा। यह सामूहिक तौर पर राष्ट्रीय बलिदान का समय है। इस समय हम अपने आप को घरों में रखकर यह भी बता सकते हैं कि हमारे लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण क्या है, हमारा विश्वास, हमारे परिजन, हमारे पड़ोसी और हमारा देश। ऐसा करने से भविष्य में हमारी शानदार जीत होगी।' ट्रंप ने कहा, 'यह पूरा सप्ताह राष्ट्रीय एकजुटता का रहा है। रिपब्लिकन, डेमोक्रेट, कंजरवेटिव और निर्दलीय सभी एक साथ आ रहे हैं। यह देखना वास्तव में बहुत अच्छा लग रहा है। हम सभी एक सुंदर और बड़ा अमेरिकी परिवार हैं और फिलहाल ऐसा होता दिख भी रहा है।' वैसे संघीय सरकार ने लोगों को घर पर रहने के कोई आदेश तो जारी नहीं किए हैं, लेकिन प्रांतीय और स्थानीय प्रशासन ने इस संबंध में कदम उठाए हैं। कैलिफोर्निया, इलिनोइस, न्यूयॉर्क और कनेक्टिकट में तो लोगों को एक-दूसरे से अलग-थलग रहने का निर्देश जारी किया गया है। ऐसा नहीं करने पर कनेक्टिकट प्रशासन ने आर्थिक जुर्माना लगाने की चेतावनी दी है। इन प्रांतों में लगभग साढ़े सात करोड़ लोग रहते हैं। बता दें कि कोरोनावायरस के खिलाफ लड़ाई में पूरा भारतीय-अमेरिकी समुदाय भी सरकार के खड़ा है। कई एनजीओ जरूरतमंदों को भोजन उपलब्ध कराने के लिए चौबीस घंटे की हेल्पलाइन चला रहे हैं। इसके अलावा पूरे अमेरिका के मंदिरों और गुरुद्वारों को अगले आदेश तक बंद कर दिया गया है।

वाशिंगटन स्थित व्हाइट हाउस में कोरोना को लेकर प्रेस कांफ्रेंस में सवालों के जवाब देते अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप। एपी

- देशवासियों को खाद्य सामग्री की कमी नहीं होने का दिया आश्वासन
- कैलिफोर्निया, इलिनोइस, न्यूयॉर्क और कनेक्टिकट में लोगों को अलग-थलग रहने का निर्देश

उपराष्ट्रपति पेंस और उनकी पत्नी का टेस्ट निगेटिव

अमेरिका के उपराष्ट्रपति माइक पेंस और उनकी पत्नी करेन पेंस का कोरोनावायरस का टेस्ट निगेटिव आया है। उन्होंने यह परीक्षण तब कराया जब उनके स्टॉफ के एक व्यक्ति का टेस्ट पॉजिटिव आया था। हालांकि कहा जा रहा है कि यह व्यक्ति कभी पेंस या राष्ट्रपति ट्रंप के सीधे संपर्क में नहीं रहा है। संक्रमित व्यक्ति का नाम नहीं बताया गया है। बता दें कि इससे पहले राष्ट्रपति ट्रंप ने पिछले सप्ताह टेस्ट कराया था, जिसकी रिपोर्ट निगेटिव आई थी।

कोरोना से निपटने को ट्रंप ने उत्तर कोरिया को दी मदद की पेशकश

सियोल, एपी : अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने उत्तर कोरिया के नेता किम जोंग उन को व्यक्तिगत तौर पर एक पत्र भेजकर अच्छे संबंध बनाए रखने की अपील की है। साथ ही वैश्विक महामारी के खिलाफ लड़ाई में सहयोग की पेशकश की है। किम की बहन ने रविवार को यह जानकारी दी। खास बात यह है कि ट्रंप ने उत्तर कोरिया के समक्ष यह प्रस्ताव ऐसे समय रखा है, जब शनिवार को उत्तर कोरिया ने अमेरिकी दबाव के बीच अपनी मिसाइल का परीक्षण किया है। किम की बहन और सत्तारूढ़ पार्टी की वरिष्ठ नेता किम यो जोंग ने ऐसे समय में पत्र भेजने के लिए ट्रंप की तारीफ की जब दोनों देशों के बीच अच्छे संबंध बनाने के रास्ते में बड़ी मुश्किलें और चुनौतियां आ रही हैं। उन्होंने कहा कि पत्र में ट्रंप ने दोनों देशों के बीच संबंधों को बढ़ाने की अपनी योजना बताई और कोरोना वायरस जैसी वैश्विक महामारी के खिलाफ सहयोग देने की मंशा जताई है। अभी व्हाइट हाउस की ओर से इस पर कोई टिप्पणी नहीं आई है। किम यो जोंग ने कहा कि ट्रंप का पत्र दोनों देशों के संबंधों को मजबूत करने का अच्छा उदाहरण है।

कोरोना को हराने के लिए पोप ने किया दुनियाभर में प्रार्थना का आह्वान

वेटिकन सिटी, रायटर : कोरोना वायरस को हराने के लिए पोप फ्रांसिस ने दुनियाभर में प्रार्थना का आह्वान किया है। उन्होंने रविवार को कहा कि वह इस हफ्ते शुक्रवार को शहर और दुनिया तक (उर्बी एट ओरबी) ब्लेसिंग देंगे। यह ब्लेसिंग वह सामान्यत: क्रिसमस और ईस्टर पर देते हैं। पोप फ्रांसिस ने यह अप्रत्याशित घोषणा अपने साप्ताहिक ऐंजलस मैसेज में की जिसे सेंट पीटर्स स्क्वायर में श्रद्धालुओं के समक्ष देने के बजाय वेटिकन के अंदर से इंटरनेट और टेलीविजन के जरिये प्रसारित किया जा रहा है। पोप की ओर से विशेष उर्बी एट ओरबी ब्लेसिंग देने का यह फैसला दुनियाभर और खासकर इटली में हालात की गंभीरता को दर्शाता है। पोप का कहना है कि वह यह ब्लेसिंग खाली सेंट पीटर्स स्क्वायर से देंगे जिसे इटली में लॉकडाउन के तहत बंद कर दिया गया है।

पोप फ्रांसिस। फाइल

ईरान ने अमेरिका की सहायता की पेशकश को ठुकराया

- सर्वोच्च नेता खामनेई ने कहा, अमेरिका हमारा कट्टर दुश्मन

दुबई, एजेंसियां : ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामनेई ने कोरोना के प्रकोप से लड़ने के लिए अमेरिका की सहायता की पेशकश को ठुकरा दिया है। बकौल खामनेई, 'हो सकता है कि यह वायरस अमेरिका द्वारा पैदा किया गया हो।' बता दें कि तेहरान के विवादास्पद परमाणु कार्यक्रम को लेकर अमेरिका ने ईरान पर कई तरह के प्रतिबंध लगा रखे हैं। इसमें कच्चे तेल की बिक्री पर रोक प्रमुख है। इसके चलते ईरान को आर्थिक दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है।

एक टीवी संबोधन में खामनेई ने कहा, 'अमेरिका हमारा कट्टर दुश्मन है। हो सकता है कि उसकी दवा वायरस को और फैला दे। अगर वह डॉक्टर और थेरेपिस्ट भेजते हैं तो वह आकर यह देखेंगे कि वायरस का प्रभाव कैसे हो रहा है, क्योंकि ऐसा कहा जाता है कि वायरस का एक हिस्सा ईरान के लिए बनाया गया है।' खामनेई ने अपने बयान के संदर्भ में किसी वैज्ञानिक तथ्य का हवाला तो नहीं दिया है, लेकिन उनकी इस टिप्पणी को इस महीने की शुरुआत में चीन सरकार के प्रवक्ता से जोड़कर देखा जा रहा है। बता दें कि चीन सरकार के प्रवक्ता लिझियान झाओ ने ट्वीट करके कहा था कि हो सकता है कि वुहान में अमेरिकी सेना इस वायरस को लाई हो। हालांकि उन्होंने भी अपने दावों के समर्थन में कोई प्रमाण नहीं दिए थे। उनकी इस टिप्पणी पर अमेरिका ने कड़ा एतराज जताया था और चीन के राजदूत को तलब कर कड़ी प्रतिक्रिया दर्ज कराई थी। बता दें कि वुहान पहला वह शहर है जहां पर वायरस संक्रमित पहले व्यक्ति के बारे में पता चला था।

तेहरान में टीवी संबोधन के दौरान ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला खली खामनेई। रायटर

न्यूज गैलरी

गुलाम कश्मीर के नेताओं ने मोदी के कदमों का समर्थन किया

लंदन : निर्वासित जीवन व्यतीत कर रहे गुलाम कश्मीर और गिलगित बाल्टिस्तान के कश्मीरी नेताओं ने कोरोना के खिलाफ पीएम मोदी द्वारा उठाए गए कदमों का समर्थन किया है। ग्लासगो में रहने वाले गुलाम कश्मीर के डॉ. अमजद अयूब मिर्जा ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी द्वारा जनता कर्फ्यू का एलान बहुत ही सराहनीय कदम है। उन्होंने कहा कि नेतृत्व की कमी और किसी प्रकार की राष्ट्रीय कार्ययोजना नहीं होने के कारण पाकिस्तान में स्थिति नियंत्रण से बाहर है। उन्होंने कहा कि चीन और गिलगित-बाल्टिस्तान के बीच की सीमा को बंद किया जाना चाहिए, क्योंकि इस क्षेत्र में कोरोना का प्रसार बहुत तेजी से फैल रहा है। इस क्षेत्र में आइसोलेशन की सुविधाओं की कमी के साथ ही टेस्ट किट की भी कमी है। गिलगित में ओसामा नाम का एक युवा डॉक्टर अपने जीवन के लिए संघर्ष कर रहा है। (एजेंसियां)

रूस ने इटली भेजे वायरस विशेषज्ञ और डॉक्टर

मॉस्को : रूस ने रविवार को नौ में से पहले सैन्य विमान को इटली रवाना कर दिया। इनमें वायरस विशेषज्ञ और डॉक्टर गए हैं। रूस इन विमानों के जरिये कुल 100 वायरस विशेषज्ञों और डॉक्टरों को इटली भेजेगा। रूस के रक्षा मंत्री ने बताया कि राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और इटली के प्रधानमंत्री ग्यूसेप कोंटे के बीच इस सहायता मिशन पर सहमति बनी है। क्रेमलिन के मुताबिक, दोनों नेताओं ने इस संबंध में शनिवार शाम फोन पर बात की थी। रक्षा मंत्रालय ने बताया कि सैन्य परिवहन विमान मॉस्को के बाहर स्थित एयरपोर्ट पर पहुंच गए हैं और आठ मेडिकल टीमें भी मोबाइल एयरोसोल विसंक्रमण इकाइयों और चिकित्सा उपकरणों के साथ रवाना होने के लिए तैयार हैं। ये विशेषज्ञ पूर्व में इबोला, अफ्रीकन स्वाइन फीवर और एंथ्रेक्स जैसे वायरसों से निपट चुके हैं। (एएफपी)

कर्फ्यू तोड़ने पर श्रीलंका में 340 लोग गिरफ्तार

कोलंबो : राष्ट्रव्यापी कर्फ्यू तोड़ने के आरोप में श्रीलंका में 340 लोगों को गिरफ्तार किया गया है। श्रीलंका के राष्ट्रपति गोतबाया राजपक्षे ने शुक्रवार से सोमवार तक राष्ट्रव्यापी कर्फ्यू का एलान किया था। यह कर्फ्यू सोमवार को खत्म होना था, लेकिन इसे बढ़ा दिया गया था। (एजेंसियां)

खौफ में दुनिया, 35 देशों में लॉकडाउन घोषित

सावधानी ▶ घरों में कैद रहे एक अरब से ज्यादा लोग, अधिकतर देश कर रहे हैं सीमाओं को सील

स्पेन के राष्ट्रपति पेड्रो सांचेज ने आने वाला समय और कठिन होने के दिए संकेत

रोम, एजेंसियां : कोरोना वायरस के खौफ के चलते दुनियाभर के 35 देशों में लॉकडाउन घोषित कर दिया गया। इसके चलते रविवार को एक अरब से अधिक लोग अपने घरों में ही कैद रहे। वायरस की महामारी से बचने के लिए अधिकतर देश यात्रा प्रतिबंधों और सीमाओं को सील करने जैसे कई सख्त उपाय कर रहे हैं। स्पेन के प्रधानमंत्री पेड्रो सांचेज ने तो यहां तक संकेत दे दिया है कि आगे और कठिन समय आने वाला है।

महामारी से सर्वाधिक प्रभावित इटली के प्रधानमंत्री ग्यूसेप कांते ने शनिवार को अपने टीवी संबोधन में सभी गैरजरूरी कल-कारखानों को बंद करने की घोषणा की। बता दें कि इटली कोरोनावायरस से सर्वाधिक प्रभावित है। वहां अभी तक 4800 से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है। अमेरिका के एक तिहाई हिस्से न्यूयॉर्क, शिकागो और लॉस एंजिलिस जैसे प्रांतों में भी लॉकडाउन है। अमेरिका के अन्य प्रांतों द्वारा लॉकडाउन किए जाने की उम्मीद है। बेल्जियम की स्वास्थ्य मंत्री मैगी डी ब्लॉक ने कहा कि कोरोनावायरस के चलते देश में हुआ लॉकडाउन आठ सप्ताह और चल सकता है। बेल्जियम में 17 मार्च से लॉकडाउन है और सिर्फ लोगों को जरूरी सामान खरीदने के लिए ही निकलने की छूट प्रदान की गई है। स्कूल और यूनिवर्सिटी बंद हैं और निजी कंपनियों के कर्मचारी घर से ही काम कर रहे हैं। इराक में भी रविवार से पूरे देश में 28 मार्च तक लॉकडाउन की घोषणा कर दी गई। शनिवार से जार्डन में तीन दिनों के लिए लॉकडाउन लागू कर दिया गया। ओमान ने लोगों के एकत्र होने पर प्रतिबंध लगाने के साथ ही करेंसी एक्सचेंज स्टोर्स को भी बंद करने का आदेश दिया है। मलेशिया ने देश में घूमने-फिरने पर प्रतिबंध को कड़ाई से लागू करने के लिए सेना को तैनात किया।

जॉनसन बोले-ब्रिटेन में हो सकते हैं इटली जैसे हालात: ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन ने चेतावनी दी है कि अगर देशवासियों ने घर पर रहकर वायरस को फैलने से नहीं रोका तो दो से तीन सप्ताह में इटली जैसे हालात यहां भी हो सकते हैं। वहीं राष्ट्र के नाम लिखे एक पत्र में उन्होंने लोगों से मदर डे के दिन वीडियो कॉल के माध्यम से संदेश देने की बात कही।

स्पेन में कोरोना वायरस के कारण अस्पतालों में जगह कम पड़ने लगी है। इसे देखते हुए राजधानी मैड्रिड स्थित आइएफईएमए कंवेंशन सेंटर को स्पेन की सेना ने 5500 बेड के अस्पताल में बदल दिया है। इसी तर्ज पर स्पेन में होटलों को भी करोना मरीज के वार्ड में तब्दील किया जा रहा है। एपी

विश्व में महामारी से मरने वालों की संख्या 13,444 हुई

देश	मौतें	संक्रमित
चीन	3261	81054
इटली	4825	53,578
स्पेन	1720	28,572
इरान	1685	21,638
फ्रांस	562	14,459
अमेरिका	340	26,747
ब्रिटेन	233	---
इराक	20	233
मिस्र	8	285

मैड्रिड, एजेंसियां : कोरोना वायरस की महामारी से पूरे विश्व में मरने वालों की संख्या 13,444 हो गई है। वहीं संक्रमित लोगों का आंकड़ा तीन लाख से ज्यादा हो गया है। महामारी से मरने वालों की बात करें तो इटली में इनकी संख्या 4800 से अधिक हो गई है वहीं स्पेन में मरने वालों की संख्या 1700 को पार कर गई है। संक्रमित व्यक्तियों की बात करें तो डेढ़ लाख लोग अकेले यूरोप में संक्रमित हैं। अकेले इटली में इनकी संख्या 53,000 से ज्यादा है। ईरान में मरने वालों की संख्या 1,685 हो गई है।

चीन में तीन दिन बाद मिला कोविड-19 का पहला स्थानीय मामला

बीजिंग, एजेंसियां : चीन में तीन दिन बाद कोरोना वायरस संक्रमण (कोविड-19) का एक स्थानीय मामला (विदेश से लौटे व्यक्ति से संक्रमण) मिला है। जबकि 45 आयातित संक्रमण (विदेश से लौटे चीनी नागरिक) के मामले भी सामने आए हैं।

चीन के राष्ट्रीय स्वास्थ्य आयोग (एनएचसी) ने रविवार को बताया कि कोरोना वायरस संक्रमण के 46 नए मामले सामने आए। इनमें गुआंगझोऊ का एक स्थानीय संक्रमण का मामला शामिल है। चीन में इस वायरस के संक्रमण से छह लोगों की मौत भी हुई है इनमें पांच हुबेई प्रांत के हैं। इस तरह चीन में कोरोना वायरस संक्रमण से मरने वालों की संख्या बढ़कर 3,261 हो गई है। कोरोना वायरस का केंद्र रहे वुहान में हालांकि लगातार चौथे दिन कोरोना वायरस का कोई नया मामला सामने नहीं आया। चीन में कोरोना से संक्रमण के कुल मामले बढ़कर 81,054 हो गए हैं। इनमें 3,261 लोगों की मौत हो चुकी है, 5,549 मरीजों का इलाज किया जा रहा है और ठीक होने के बाद 72,244 लोगों को अस्पतालों से डिस्चार्ज किया जा चुका है। शनिवार को 504 लोगों को ठीक होने के बाद अस्पतालों से डिस्चार्ज किया गया। जबकि गंभीर मामलों की संख्या 1,845 से घटकर 118 रह गई है।

अब महज 45 मिनट में हो सकेगी कोरोना की जांच

वाशिंगटन, प्रेट्र : अमेरिकी फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन (एफडीए) ने कोरोना वायरस से निपटने के लिए डायग्नोस्टिक टेस्ट को मंजूरी दे दी है। इस टेस्ट के जरिये 45 मिनट में यह पता लगाया जा सकेगा कि व्यक्ति कोरोना से संक्रमित है या नहीं।

कैलिफोर्निया स्थित कंपनी सेफिड द्वारा विकसित इस तरह के डायग्नोस्टिक्स परीक्षण की मंजूरी से संक्रमित लोगों की तेजी से पहचान करने में मदद मिलेगी और उनका इलाज जल्द शुरू किया जा सकेगा। यह परीक्षण अगले सप्ताह से शुरू होगा।

स्वास्थ्य एवं मानव सेवा सचिव एलेक्स अजार के मुताबिक, आज हम जिस परीक्षण को मंजूरी दे रहे हैं, वह अमेरिकियों को मौजूदा परीक्षणों की तरह दिनों के बजाय कुछ मिनटों में परिणाम प्रदान करने में सक्षम होगा। कंपनी ने इसे 30 मार्च तक शुरू करने की योजना बनाई है। उन्होंने कहा कि सेफिड द्वारा यह परीक्षण दुनियाभर के 23 हजार से अधिक स्वचालित जीनएक्सपर्ट सिस्टम्स द्वारा डिजाइन किया गया है। एलेक्स के मुताबिक, चिकित्सकों की बढ़ती मांग के मद्देनजर कोरोना महामारी से निपटने के लिए मरीजों के दैनिक परीक्षण को ध्यान में रखते हुए रियल टाइम में यह जांच जल्द उपचार शुरू करने में कारगर साबित होगी।

सेफिड के चीफ मेडिकल एंड टेक्नोलॉजी ऑफिसर डेविड पर्सिंग ने कहा कि व्यक्ति की जल्द और सटीक जांच से कोरोना के कारण स्वास्थ्य सुविधाओं पर पैदा हुए दबाव को कम करने में मदद मिल सकती है। सेफिड के अध्यक्ष वॉरेन कोकमंड ने कहा कि मौजूदा समय में सेफिड के पास करीब 5,000 जीनएक्सपर्ट सिस्टम हैं, जो प्वाइंट-ऑफ-केयर परीक्षण अस्पतालों में उपयोग के लिए सक्षम हैं।

दुनिया के आधे छात्र नहीं जा पा रहे स्कूल : यूनेस्को

पेरिस, एएनआइ : 85 करोड़ से ज्यादा बच्चे और युवा यानी दुनिया में छात्रों की आबादी का लगभग आधा हिस्सा स्कूलों और विश्वविद्यालयों से दूरी बनाए रखने को मजबूर हो गया है। यह संकट कोरोना वायरस महामारी के कारण उठ खड़ा हो गया है। यह जानकारी संयुक्त राष्ट्र शैक्षणिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) ने दी है।

यूनेस्को ने कहा, '17 मार्च 2020 तक कोविड-19 महामारी के कारण 85 करोड़ युवा और बच्चे जो दुनिया भर में छात्रों की करीब आधी आबादी है, स्कूलों और विश्वविद्यालयों से दूर हैं। 102 देशों में राष्ट्रीय स्तर पर स्कूल बंद हैं और 11 अन्य देशों में स्थानीय शट डाउन है। यह संख्या बढ़ सकती है।' यूनेस्को ने कहा है कि स्कूल और विश्वविद्यालयों के बंद होने की स्थिति शिक्षा क्षेत्र के लिए अप्रत्याशित चुनौती है। वैश्विक संस्था ने कहा कि सभी देश डिस्टेंस लर्निंग सॉल्यूशन से शून्यता भरने का प्रयास कर रहे है।

गुलाम कश्मीर में जानलेवा वायरस पीड़ितों को भेज रहा पाकिस्तान

- संक्रमित होने के खतरे से कश्मीरी विरोध में, निर्वासित नेता ने भी विरोध में बयान जारी किया

बर्न, एएनआइ : जानलेवा कोरोना वायरस से पीड़ित मरीजों को पाकिस्तान अपने कब्जे वाले कश्मीर (गुलाम कश्मीर) में स्थानांतरित कर रहा है। इससे गुलाम कश्मीर में रहने वालों पर कोरोना वायरस का खतरा बढ़ गया है। यूनाइटेड कश्मीर पीपुल्स नेशनल पार्टी के निर्वासित अध्यक्ष सरदार शौकत अली कश्मीरी ने पाकिस्तान सरकार के इस कदम पर कड़ी आपत्ति जाहिर की है। उल्लेखनीय है कि पंजाब प्रांत के कोरोना पीड़ित लोगों को गुलाम कश्मीर के मीरापुर जिले में भेजा जा रहा है जिससे कि पंजाब के शहरों को कोरोना के संक्रमण से बचाया जा सके।

कश्मीरी ने कहा, पाकिस्तान खुद को बचाने के लिए गुलाम कश्मीर को मुश्किल में डाल रहा है। वह कोरोना पीड़ितों को गुलाम कश्मीर में भेजकर वहां की मरीजों की संख्या बढ़ाना चाहता है। इसके पीछे उसका एक अन्य मकसद यह भी है कि वह ऐसा करके अंतरराष्ट्रीय सहायता प्राप्त करना चाहता है जिससे उसका फायदा हो सके। यह पाकिस्तान सरकार और वहां की सेना की शैतानी चाल है। राहत की बात यह है कि मीरापुर के लोग पाकिस्तान की इस चाल को समझ गए हैं और वे मरीजों को लाए जाने का विरोध कर रहे हैं। कश्मीरी ने कहा, पाकिस्तानी सुरक्षा बल मीरापुर और आसपास के लोगों से जबरन उनके मकान और अन्य इमारतें खाली करा रहे हैं। कई कारोबारी इमारतों और मोहिउद्दीन टीचिंग हॉस्पिटल को खाली कराकर उन्हें क्वारंटाइन सेंटर बना दिया गया है। पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी के लोग विरोध करने वालों को धमका रहे हैं और सहयोग करने के लिए दबाव डाल रहे हैं।

महामारी के बीच शहबाज शरीफ पाकिस्तान लौटे

शहबाज शरीफ। फाइल

इस्लामाबाद, एजेंसियां : कोरोनावायरस की महामारी के बीच विपक्ष के नेता शहबाज शरीफ रविवार को लंदन से पाकिस्तान लौट आए। बता दें कि एक दिन पहले ही महामारी को फैलने से रोकने के लिए पाकिस्तान ने अंतरराष्ट्रीय उड़ानों पर दो सप्ताह का प्रतिबंध लगा दिया था।

पाकिस्तान मुस्लिम लीग नवाज (पीएमएल-एन) के अध्यक्ष और पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ के छोटे भाई इस्लामाबाद अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरे, जहां उनकी कोरोना वायरस की जांच की गई। पाकिस्तान आने के बाद उन्होंने ट्वीट किया, 'अभी-अभी इस्लामाबाद में उतरा हूं। एक-दूसरे से दूरी बनाए रखें और अपने घरों में ही रहने की कोशिश करें ताकि हमसे कोई भी इस वायरस से प्रभावित नहीं हो। आप सभी को प्यार।' 68 वर्षीय शहबाज ने कहा कि वह शरीफ के निर्देश पर पाकिस्तान लौटे हैं। उन्होंने कहा, 'मेरा मानना है कि संकट के समय पाकिस्तान में मेरी ज्यादा जरूरत है। नवाज शरीफ ने मुझसे कोरोनावायरस के पीड़ितों की मदद करने और जरूरत के समय उनके बीच रहने का निर्देश दिया है।' अपने आने के बाद मीडिया से बातचीत में शहबाज ने कहा कि पाकिस्तान एक राष्ट्र की तरह घातक कोरोनोवायरस के खिलाफ लड़ेगा और उसे हराएगा। शहबाज ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री नवाज का इलाज जल्द ही शुरू हो जाएगा, क्योंकि उनके डॉक्टर छुट्टी से लौट आए हैं।

बड़ा सवाल

चीन से बहुत आगे निकले यूरोप में संक्रमण और मौत के आंकड़े, सरकारों का सख्त कदम नहीं उठा पाना बना परेशानी बढ़ने की वजह

क्या ज्यादा आजाद समाज की कीमत चुका रहे यूरोप के देश?

न्यूयॉर्क टाइम्स से

जेएनएन, नई दिल्ली

जिस चीन से कोरोना के संक्रमण की शुरुआत हुई थी, उसने इस पर लगभग नियंत्रण पा लिया है। वहीं, यूरोपीय देशों में संक्रमण और मौत का आंकड़ा चीन को कहीं पीछे छोड़ चुका है। हालात देखकर लगता है कि शायद अभी और भी बुरी स्थिति होनी है। इन आंकड़ों के बीच सवाल यह भी उठने लगा है कि आखिर सुविधासंपन्न यूरोपीय देशों में स्थिति इतनी गंभीर क्यों हो गई है? चीन के अनुभव के बाद और पर्याप्त समय होते हुए भी आखिर यूरोपीय देशों में यह महामारी इतनी गंभीर स्थिति तक कैसे पहुंच गई? जानकारों का कहना है कि इस मामले में यूरोपीय देश अपने समाज के खुलेपन और ज्यादा मजबूत लोकतांत्रिक व्यवस्था की कीमत चुका रहे हैं। सुनने में यह बात थोड़ा अजीब लग सकती है, लेकिन काफी हद तक यह कारण सही है।

यूरोपीय देशों की व्यवस्था में लोगों को ज्यादा आजादी है, अपने फैसले करने का अधिकार है और अपनी इच्छा से जीवन जीने का विकल्प भी है। यहां सरकारें बहुत ज्यादा सख्ती करने से घबराती हैं। लगभग हर ऐसे फैसले में जनता की राय की दरकार रहती है, जिससे पूरे समाज पर कोई प्रभाव पड़ता हो। दूसरी तरफ चीन में सरकार ने बेहद सख्ती से कदम उठाए। लोगों को शहरों यहां तक कि अपने घरों से भी निकलने की आजादी नहीं दी गई। भोजन और चिकित्सा के अलावा किसी भी अन्य कारण से घर से बाहर निकलने की अनुमति नहीं थी। बर्कले की यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया के डॉ. आर्थर एल. रीनगोल्ड ने कहा, 'चीन इससे भी आगे जाने को तैयार है। लोगों पर निगाह रखने के लिए ड्रोन का इस्तेमाल किया जा रहा है। सड़कें ब्लॉक कर दी गई हैं। वहीं यूरोप में जो भी कदम उठाए गए हैं या उठाए जा रहे हैं, उनमें से कोई भी चीन जितने सख्त नहीं हैं।'

पिछले अनुभव से सीख : चीन ने कोरोना से निपटने में अपने पिछले अनुभवों से मिली सीख का भी इस्तेमाल किया। यूनाइटेड स्टेट्स सेंटर्स फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन के पूर्व डायरेक्टर थॉमस आर. फ्रीडन ने कहा, 'उन्होंने 2003-04 में सार्स का सामना किया है। इसके बाद से वह अगली बार के लिए तैयार थे।' चीन ने शुरुआती कुछ हफ्तों में कदम उठाने में देरी जरूर की थी, लेकिन उसके बाद वह जितनी दृढ़ता से जुटा, यूरोपीय देश उससे कहीं पीछे हैं। किसी नए तरह के वायरस की सूचना मिलने के महीनेभर के भीतर ही चीन ने पहला लॉकडाउन कर दिया था। जब वुहान लॉकडाउन किया गया था, उस वक्त दुनियाभर में 600 से भी कम केस थे। यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन के फ्रांकोइस बेलॉस ने कहा, 'चीन ने शुरुआत में भले देर की। बेशक उसके कुछ कदमों का मैं समर्थन नहीं कर सकता हूं, लेकिन सच यही है उसने वायरस के प्रसार को रोक लिया।'

इटली में कोरोना वायरस का संक्रमण महामारी का रूप ले चुका है। मिलान शहर में प्लाजो मैरिनो बिल्डिंग पर देश के ध्वज के रंगों की रोशनी करके एकजुटता का संदेश दिया गया। रायटर

समय रहते नहीं चेता यूरोप

इटली ने पहली बार जब लॉकडाउन जैसा कदम उठाया, तब देश में 7300 मामले आ चुके थे। यह कदम भी बहुत सख्त नहीं था। फ्रांस और स्पेन की हालत भी कमोबेश ऐसी ही रही। डॉ. फ्रीडन ने कहा, 'कम्युनिटी ट्रांसमिशन शुरू होने के हफ्तेभर के भीतर आपको सख्ती से सोशल डिस्टेंसिंग का पालन सुनिश्चित करना चाहिए। इसमें देरी हुई तो स्थिति विस्फोटक हो जाती है। स्थिति विस्फोटक होने के बाद इस पर लगाम लगाना मुश्किल हो जाता है।'

अन्य एशियाई देशों की रणनीति अलग

एशिया के अन्य कई देश चीन और यूरोप से अलग रणनीति अपना रहे हैं। यहां बड़े पैमाने पर जांच हो रही है। ट्रांसमिशन की चेन को तोड़ने के लिए हर संक्रमित के संपर्क में आने वाले की तत्काल पहचान की जा रही है। ये देश अर्थव्यवस्था को शटडाउन किए बिना ही सब कदम उठा रहे हैं। सिंगापुर, ताइवान और दक्षिण कोरिया ने इसी रणनीति से अपने यहां संक्रमण के मामलों को कम रखने में सफलता पाई है। भारत भी अभी काफी हद तक स्थिति को गंभीर होने से बचाने में सफल रहा है।